SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

आधुनिक भारत एवं आत्मनिर्भर महिला

शिवानी राय, (Ph.D.) समाजशास्त्र विभाग
शासकीय महाविद्यालय, हटा, जिला दमोह, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
शिवानी राय

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/05/2023
Revised on : -----
Accepted on : 26/05/2023
Plagiarism : 00% on 17/05/2023

शोध सार

आधुनिक समाज महिलाओं का समाज है, ऐसा कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा। वर्तमान में समाज में महिलाओं का जो स्थान है, भारत के निर्माण में उनकी जो भूमिका है, लेकिन यहां तक पहुंचने में उन्हें आजादी के बाद कई दशक लग गए। जैसे कि हम सभी जानते हैं कोई भी अविष्कार उपलब्धि अचानक प्राप्त नहीं होती, उसके पीछे वर्षों का संघर्ष मेहनत छुपा रहता है, उसी प्रकार आज के भारतीय समाज में महिलाओं को जो कई क्षेत्रों में उपलब्धि स्थान सम्मान प्राप्त हुआ है वह किसी एक व्यक्ति का नहीं अपितु कई महिलाओं पुरुषों के संघर्षों का परिणाम है। प्रस्तुत अध्ययन में अन्वेषणात्मक अनुसंधान का प्रयोग किया गया है जिसमें प्राथमिक व द्वितीयक स्रोत का प्रयोग किया गया है। आधुनिक भारत के निर्माण में आत्मनिर्भर महिलाओं की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया गया है। महिला का मानव की शक्ति में नहीं वरन् समाज और राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। राष्ट्र का समग्र विकास महिलाओं की भागीदारी के बिना संभव नहीं है। जब महिलाएं राष्ट्रीय विकास की मुख्यधारा में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएंगी तभी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव है।

मुख्य शब्द

महिला, आत्मनिर्भर, समाज, राष्ट्र, स्थिति.

प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्ययन में हम प्राचीन मध्य व आधुनिक समाज मे महिलाओं की स्थिति का भी वर्णन करेंगे। वैदिक युग की बात करें तो उस समय महिलाओं की स्थिति सम्मान पूर्वक थी, उस समय महिलाएं पुरुषों के समकक्ष थी। वह स्वतंत्र और सम्मानीय थी, श्रम और संपत्ति में बराबर की अधिकारी थी। वह गृह स्वामिनी तो थी ही किंतु उनका कार्यक्षेत्र घरों तक ही सीमित नहीं था

वह असाधारण विचारीका और पंडिता भी होती थी। वैदिक युग की इस परंपरा की अनुगूंज हमें पुराणों में भी सुनाई देती है "नर नारी प्रोदधरति मजजंत भववारिधै।" अर्थात् संसार समुद्र में डूबते हुए नर का उद्धार नारी करती है।

मध्य युग में महिलाओं की स्थिति धीरे–धीरे क्षीण होती गई है। वह आक्रमणकारी बाहरी शासकों के हस्तक्षेप कुप्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा, सती प्रथा, विधवा पुनर्विवाह पर रोक और लंबे–लंबे वर्षों तक गुलामी का शिकार होने के कारण महिलाओं को अपनी आहुति देनी पड़ी। इसी मध्य युग के अंतिम अवस्था में कई ऐसे महान वीरांगना विदेशियों का जन्म भी हुआ जिन्होंने अपनी वीरता, साहस, विद्ववता से समाज का रुख बदलना शुरू कर दिया। धीरे–धीरे समाज महिलाओं के प्रति चिंतनशील हो गया। इनमें महान पुरुषों की भी जिन्हें समाज सुधारक भी कहा जाता है की अहम भूमिका रही, जिसमें राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, भीमराव अंबेडकर इत्यादि सम्मिलित हैं।

आधुनिक युग के आगमन तथा पाश्चात्य सभ्यता के प्रवेश के साथ ही महिलाओं के उत्थान के प्रयास होने लगे। यह आवश्यक समझा जाने लगा कि समग्र महिलाओं की सहभागिता के बिना राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं है। महिला उत्थान के लिए आवश्यक था महिला का शिक्षित होना और पुरुषों की समकक्षता महिलाओं को जागरूक बनाने तथा उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए संविधान का 73वाँ संशोधन इस क्षेत्र में उठाया गया एक ठोस कदम है।

राष्ट्र निर्माण में आत्मनिर्भर महिलाओं की अहम भूमिका होती है शोधार्थी ने शोधपत्र में इसी को केंद्र बिंदु बनाया है। एक आत्मनिर्भर महिला अपने साथ अपने परिवार, समाज, राष्ट्र का उत्थान करने की क्षमता रखती है। आज के आधुनिक व प्रौद्योगिकी युग में महिला व पुरुष दोनों ही मिलकर अपनी परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं तो इसके हमें प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सकारात्मक परिणाम देखने को मिलते हैं, जिससे महिला स्वयं सम्मानित महसूस करती हैं कि वह अपने परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। महिलाएँ बाहर व अंदर दोनों कार्यों को बखूबी निभाना जानती हैं। एक महिला जब आत्मनिर्भर बनती है तो वह अपने साथ जुड़ी अन्य महिलाओं को भी वांछित, अवांछित रूप से प्रेरणा देने का काम करती है। वह समाज में संदेश देती है कि एक आत्मनिर्भर महिला अपने परिवार समाज व राष्ट्र को कितनी ऊंचाई तक ले जाती हैं। यहां हम कुछ आत्मनिर्भर महिलाओं की बात करेंगे, जिसमे प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, प्रथम मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन, प्रथम विश्व सुंदरी रीता फारिया, प्रथम महिला पायलट सुषमा, प्रथम महिला एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली कमलजीत सिंधु, प्रथम अंतर्राष्ट्रीय महिला क्रिकेट में 100 विकेट लेने वाली डायना, महिला शिक्षिका सावित्रीबाई ज्योतिबा फूले, प्रथम सर्वोच्च न्यायालय महिला न्यायाधीश मीरा साहेब फातिमा बीवी, प्रथम उच्च न्यायालय महिला न्यायाधीश, प्रथम महिला अधिवक्ता, आईपीएस किरण बेदी, नोबेल पुरस्कार विजेता अभिनेत्री देविका रानी, महिला सांसद राधाबाई शुभ रायन, प्रथम दलित महिला मुख्यमंत्री मायावती, प्रथम महिला मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी, प्रथम भारतीय वायु सेना महिला पायलट हरिता कौर, प्रथम महिला लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार, प्रथम हिमालय पर्वतारोही बछेंद्री पाल, प्रथम भारत रत्न इंदिरा गांधी, प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला इत्यादि का नाम लेते हैं।

वर्तमान में भी कई ऐसी महिलाएं हैं जो अपने अपने कार्य क्षेत्र में शिखर पर हैं। आज भी अनेक भारतीय महिलाएं पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर देश की प्रगति में भागीदार बन रही है। उनका कार्यक्षेत्र कारपोरेट सेक्टर हो या खेल फिल्म हो या राजनीति हो या पत्रकारिता जिनमें नैना लाल किदवई विदेशी बैंकों द्वारा भारत में निवेश कराने वाली पहली भारतीय महिला है।

देश के बड़े और पुराने औद्योगिक घराने बिरला परिवार से संबंध रखने वाली हिंदुस्तान टाइम्स समूह की अध्यक्ष और संपादकीय निदेशक सोमनाथ भर्तियां 1986 में हिंदुस्तान समूह से जुड़ी थी और तब वे भारत में किसी राष्ट्रीय समाचार पत्र की पहली महिला मुख्य कार्यकारी अधिकारी रही है। सोमनाथ भारती को बिजनेस वूमेन ऑफ द ईयर 2001 का अवार्ड भी मिल चुका है। सुनीता नारायण भारत की प्रसिद्ध पर्यावरणविद् है, सुनीता नारायण सन 1982 से विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र से जुड़ी है।

सामाजिक कार्यकर्ता तथा समाज सुधारक मेघा पाटकर, भारतीय विदेश सेवा की अधिकारी निरुपमा राव, लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन, महिला वैज्ञानिक टेसी थॉमस, भारतीय टीवी पत्रकार बरखा दत्त के अलावा फिल्म जगत से भी जुड़ी कई महिलाएं शिखर की महिला शक्तियों में शामिल है।

इसके अलावा बैडमिंटन में देश का नाम पूरी दुनिया में रोशन करने वाली साइना नेहवाल ने ही बैडमिंटन से भारत को एक कामयाब जगह दिलाई है। इन्हीं के कारण आज देश में महिलाएं बैडमिंटन में अपना कैरियर बनाने का सपना देख रही है। इनके खेल के लिए इन्हें पद्मभूषण, राजीव गांधी खेल रत्न और अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

कॉमन वेल्थ खेलों में गोल्ड मेडल जीतने वाली पहली भारतीय महिला पहलवान गीता फोगाट ने 2009 में कॉमनवेल्थ रेसलिंग चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीता था।

पहली भारतीय एथलीट अंजू बॉबी जॉर्ज, वर्ल्ड एथलेटिक्स फाइनल में गोल्ड मेडल जीत चुकी है, उनको पद्मश्री अर्जुन अवॉर्ड तथा खेल रत्न से सम्मानित किया जा चुका है। भारतीय तीरंदाज दीपिका कुमारी को अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

पूर्व एथलीट शाइनी विल्सन, महिला क्रिकेटर मिताली राज 1995 की एशियन चैंपियनशिप जीतने वाली कर्णम मल्लेश्वरी, एशियन ट्रैक एंड फील्ड में 13 गोल्ड मैडल जीतने वाली भारतीय उड़न परी पीटी उषा अर्जुन अवार्ड से सम्मानित, ग्रैंड मास्टर कोनेरू हंपी, सबसे तेज महिला गेंदबाज झूलन गोस्वामी आदि के नाम उल्लेखनीय है।

इसके साथ ही साहित्य के क्षेत्र में अग्रणी रही भारतीय महिलाओं में मीराबाई, सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, अमृता प्रीतम, कमला सुरय्या, बाल मरियम्मा, नंदिनी साहू आदि के नाम अपनी–अपनी शब्द संस्कृतियों से हमें गौरवान्वित करते हैं।

हजारों भारतीय महिलाओं ने अपने कर्म, व्यवहार और बलिदान से विश्व में आदर्श प्रस्तुत किया है। प्राचीन काल से ही भारत में पुरुषों के साथ महिलाओं को भी समान अधिकार और सम्मान मिलता रहा है इसीलिए भारतीय संस्कृति और धर्म में नारियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय महिलाओं ने जहां हिंदू धर्म को प्रभावित किया, वहीं उन्होंने संस्कृति, समाज और सभ्यता को नया मोड़ दिया है। भारतीय इतिहास में इन महिलाओं के योगदान को कभी भी भुला नहीं जा सकता। प्राचीन भारत में महिलाएं काफी उन्नत व सुदृढ़ थी, जिनमें सावित्रीबाई ज्योतिबा राव फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका समाज सुधार का एवं मराठी कवित्री थी। इसके अलावा ब्रह्म वादिनी वैद्य ऋषि मैत्रियै मित्र ऋषि की कन्या और महर्षि आग बालक की दूसरी पत्नी थी। हजारों साल पहले मैत्रीय ने अपनी विद्वता से ना केवल स्त्री जाति का मान बढ़ाया, बल्कि उन्होंने यह भी सच साबित कर दिखाया था कि पत्नी धर्म का निर्वाह करते हुए भी स्त्री ज्ञान अर्जित कर सकती है। रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित झांसी राज्य की रानी और 1857 की राज्य क्रांति की द्वितीय शहीद वीरांगना थी। उन्होंने सिर्फ 29 साल की उम्र में अंग्रेज साम्राज्य की सेना से युद्ध किया और रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हुई। इसके अलावा सोनिया गांधी, अरुंधति राय, सुनीता विलियम्स, मैरी कॉम, मेघा पाटकर इत्यादि भारतीय महिलाओं ने अपनी मेहनत और काबिलियत के दम पर सफलता के कई ऐसे मुकाम हासिल किए हैं, जो हर किसी के लिए मिसाल है। वैसे तो भारत में अनगिनत महिलाएं हैं जिन्होंने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है।

आज महिलाओं का जब समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अवलोकनार्थ किया जाता है तो यह पाया जाता है कि हमारे समाज में व्याप्त कुप्रथाएं प्रमुख रूप से पर्दा प्रथा, विधवा विवाह पर रोक, बाल विवाह, दहेज प्रथा, लिंग असमानता, शिक्षा की असमानता इत्यादि का अपने आप खंडन हो जाता है क्योंकि आत्मनिर्भर महिलाओं के प्रति समाज की सोच बदलने लगती है। एक आत्मनिर्भर महिला पूरे परिवार समाज व राष्ट्र का रुख बदल देती है।

शोधार्थी ने अध्ययन के दौरान यह पाया कि महिलाओं के आत्मनिर्भर बनाने में एक शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। शिक्षक को आदर्श के रूप में देखा जाता है। शिक्षक भावी पीढ़ी को तैयार करता है, शिक्षण

के माध्यम से छात्राओं को दूरगामी परिणाम बताते हुए आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा व प्रोत्साहन दे सकता है और अपनी इस भूमिका को उसे प्रमुख रूप से देखना चाहिए। इसके अलावा स्वयं एक आत्मनिर्भर महिला की भूमिका भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वह प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से अपने से जुड़ी महिलाओं को प्रेरणा देने का काम करती है साथ ही अपनी परिवार की महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करती है।

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के दौरान यह भी पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को शिक्षित व आत्मनिर्भर बनाने में समाज सरकार को अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। अभी तक जो भी प्रयास किए गए है वे सराहनीय है लेकिन पर्याप्त नहीं है। अब यदि हम कुछ प्रयास की बात करें तो सर्वप्रथम आधुनिक समाज की प्रत्येक महिलाओं को स्वयं अपने प्रति जागरूक होना होगा। अच्छे व सही कार्य को करते रहना होगा ताकि आपको सम्मान प्राप्त होगा, स्वयं से भी और परिवार, समाज व देश दुनिया से भी। अपने में नेतृत्व के गुणों का विकास करना होगा ताकि अपने अधिकारों को प्राप्त कर सके, साथ ही समय के अनुसार अपनी कुशलता को योग्यता की क्षमता को बढ़ाना होगा, ताकि वह आत्मनिर्भर बन सके अपने सम्मान की स्वयं रक्षा करना होगा। एक महिला को दूसरी महिला का सम्मान करना होगा, सम्मान के लिए किसी अन्य के मोहताज नहीं होना चाहिए। विपरीत व कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य से पीछे नहीं हटना चाहिए। इसके अलावा परिवार, समाज व राष्ट्र विकास में सदैव अपना योगदान देने का संकल्प भी रखना चाहिए। भले ही छोट–छोटे प्रयास हो लेकिन जरूरत है एक शुरुआत करने की जो हम महिलाओ को ही करनी होगी।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि महिलाएं किसी भी देश का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आत्मनिर्भर महिलाएं समाज का रुख ही बदल देती है। वह अपने साथ–साथ परिवार, समाज व राष्ट्र का उत्थान करने की क्षमता भी रख सकती है। यह बात समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समझना अति आवश्यक है कि केवल पुरुष के आत्मनिर्भर होने से परिवार समाज व देश का विकास संभव नहीं है। आज के आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में दोनों की सहभागिता महत्वपूर्ण है। शहरी क्षेत्र के साथ ग्रामीण क्षेत्रों पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जिसमें शासन के सहयोग के साथ–साथ शिक्षकों की सहभागिता भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। शिक्षक ही एक ऐसा व्यक्ति है जो भावी पीढ़ी को दिशा–निर्देश कर कहीं भी मोड़ सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. जोशी गोपा, (2006) *भारत में स्त्री असमानता एवं विमर्श,* हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली।
2. कुमार राधा, (2002) *स्त्री संघर्ष का इतिहास,* वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
3. कसम कार रेखा, (2006) *स्त्री चिंतन की चुनौतियां,* राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
4. कुमार राकेश, (2001) *नारीवाद विमर्श,* आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा।
5. कुमार धर्मेंद्र और मीना राजेश्वरी, (2021) प्रेमा कुंज प्रकाशक, साहित्यकार जयपुर।

****